गंगा की सांस्कृतिक स्वर लहरियां

सम्पादक
डॉ. मधुरानी शुक्ला • शाम्भवी शुक्ला

Scanned with OKEN Scanner

37. साहित्यिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य में गंगा 198
डॉ. सीमा चौधरी

38. सोलह संस्कार एवं गंगा 201
डॉ. सुनील कुमार तिवारी, दीपक कुमार राय

39. गंगा–नदी का भौगोलिक स्वरूप 208
डॉ. पदमा मीणा

40. फिल्म एवं फिल्मी गीतों में गंगा 215
आशुतोष शर्मा

41. गंगा का धार्मिक महत्व 219
संगीता ठाकुर

42. पुराणों में गंगा 224
सोनी घिल्डियाल

43. साहित्य और फिल्म संगीत में गंगा 230
तनुश्री कश्यप, अम्बिका कश्यप

44. Songs on River Ganges 237
Vishnu Mishra

45. Ganga–Tributary of Ariose in Karnatik Music 246
Dr. Shanti Mahesh

46. 'Ganga' in the Metrical Patterns of Kathak 252
Sunil R. Sunkara, Gayatri Bhat, Shruti Vaidya, Paullumi B. Mukheerjee

47. गंगा का साहित्यक एवं आध्यात्मिक स्वरूप 267
डॉ. ममता शर्मा गोडबोले

48. गंगा गरिमा 272
डॉ. वेनु वानिता

49. लोकगीतों में गंगा 285
डॉ. अपर्णा मिश्र

Scanned with OKEN Scanner

43

साहित्य और फिल्म संगीत में गंगा

तनुश्री कश्यप, अम्बिका कश्यप

"लहर–लहर लहराये, गंगा तोरी अमृत धारा
तेरी दर्शन से अविनाशी तरसे पावन पंथ प्रकाश
कोटिक पाप नशाये गंगा तोरी अमृत धारा
भागीरथी माँ हर–हर–हर गंगे माँ
शिव की जटा से धरा पर उतरी
सबका कलुष समेट कर भी सदा पावनी रहती माँ
तन–मन की कालिख हरती माँ, हर–हर–हर– गंगे माँ।"

समग्र संसार में, नदियों की विशालता तथा क्षेत्रफल के अनुसार 37वें स्थान पर आने वाली गंगा की महिमा, सम्मान विश्व की सभी नदियों में सर्वोत्तम है। गंगा का उद्‌गम उतर भारत में स्थित टेहरी गढ़वाल में हिमाच्छादित गंगोत्री के समीप एक हिमगुफा में है जिसे गोमुख कहते हैं।

गंगा की उत्पति के संबध में अनेक कथायें प्रचलित हैं। सूर्यवंशी राजा सगर ने अश्वमेघ यज्ञ का आयोजन किया। उस अश्व की रक्षा हेतु राजा सगर ने अपने साठ हजार पुत्रों को भेजा। इंद्र ने यज्ञ को विध्वंस करने के लिये अश्व को कपिल मुनि के आश्रम में बाँध दिया। सगर पुत्र कपिल मुनि के आश्रम में पहुँचे और कपिल मुनि का ध्यान भंग हो गया जिससे उन्होंने सभी को भस्म होने का

Scanned with OKEN Scanner

श्राप दे दिया। राजा सगर के पौत्र सभी को ढूंढते हुये वहाँ पहुँचे और कपिल मुनि से अनुनय की विनती की। मुनि ने प्रसन्न हो कर कहा कि स्वर्ग से गंगा को पृथ्वी पर लाओ और उनके जल में सभी की भस्म प्रवाहित करो तभी उनका उद्धार होगा तभी से गंगा को भागीरथी भी कहा जाने लगा।

"यथा सुरणाममृंत पितृणां च यथा स्वधा
सुधा यथा च नागांनां तथा गंगजलं नृणाम्।"

जिस प्रकार देवताओं को अमृत, पितरों को स्वधा तथा नागों को सुधा तृप्तिकारक है, उसी प्रकार मनुष्यों को गंगाजल तृप्तिकारक है। वेदव्यास (महाभारत अनुशासन वर्ष 26149)

आलौकिक गंगा के प्रचण्ड वेग को भगवान शिव ने अपनी जटाओं में धारण कर घरती पर गंगा को अवतरित किया। एक अन्य पौराणिक कथा में इसे विष्णु के चरण कमल से निकली माना गयाा है। जिस विष्णुगंगा कहा जाता है और पश्चिमी क्षेत्र में द्रोणगिरी के किनारे धौला गंगा की धारा है। यही धारा जोशी मठ के निकट विष्णु गंगा में मिलती है। तब यह धारा अलकनंदा कही जाती है। इसके आगे नंदप्रयाग में मंदाकिनी आकर अलकनंदा में मिलती है और कर्ण प्रयाग में पिंडरगंगा का मिलन होता है। तदनंतर रूद्रप्रयाग में गंगोत्री से निकलने वाली भागीरथी और अलकनंदा का संगम होता है और तब इन धाराओं के संयोग से बनी धारा गंगा कहलाती है। ऋषिकेश क्षेत्र से होकर सुखी स्थान के निकट यह मैदान में प्रवेश करती है और दक्षिण–पश्चिम हरिद्वार की ओर, मुड़ जाती है। इसके बाद देहरादून, मुजफरनगर, मेरठ, बुलंदशहर और फरूखाबाद जिलों से गुजरती रामगंगा से मिल कर इलाहाबाद में यमुना में आकर मिलती है। यहीं तीसरी नदी सरस्वती इन दोनों नदियों से मिलकर त्रिवेणी संगम बनाती है। इसके अलावा कई छोटी–छोटी गंगायें जो कि इन दोनों नदियों में मिलती है। पाताल गंगा, विष्णु गंगा, गरूड़ गंगा, सोन गंगा, पुष्पवती गंगा, मंदकिनी गंगा एक नही अनेक गंगाये बहुलता विविधता में एकता को प्रस्तुत करती है। मैदानी इलाकों से होती हुई, गंगा सागर में विलय से पूर्ण इसमें नेपाल से बहकर आने वाली नदियों के साथ दूसरी उतर वाहिनी जलधारायें मिलती है। वास्तव में गंगा के एक नदी नही अपितु एक जटिल नदी प्रणाली है। जो हिमाचल प्रदेश के जल को छूती उस के जल को बंगाल की खाड़ी तक पहुंचाती है। धार्मिक दष्टिकोण से गंगा भारतवर्ष का राष्ट्रीय महातीर्थ है। आध्यात्मिक क्षेत्र में जो महत्व गीता को प्राप्त है वही धर्म के क्षेत्र में गंगा का है। उसे यह महत्व पुराणकाल में ही प्राप्त हुआ। ऋग्वेदोतर काल में जब आर्य गंगा–यमुना के अंर्तवेदी प्रदेश में आये तो

Scanned with OKEN Scanner

उन्होंने स्वाभाविक रूप से शतपथ–ब्राहम्ण, जैमनीय ब्राह्मण तैत्रिरीय आरण्यक में गंगा की विशेष चर्चा की। पुराणों में गंगा की महता की चर्चा जितनी है उतनी किसी अन्य नदी की नही।

"गंग सकल मुद मंगल मूला
सब सुख करिन हरनि सब सुला"

(रामचरित मानस, 218712)

"हरिन पाप त्रिविध ताप सुमरित गुरसरित
बिलसति महि कल्प–बेली मुद–मनोरथ फरित
सोहत ससि धवल धार सुधा सलिल–भरित।
विमलतर तरंग लसत रघुवर के से चरित।"

–तुलसीदास (विनयपत्रिका, पद 19)

"गांगेय तु हरेंतोयं पापमामरणांतिकम्"

गंगा–जल सेवन करने पर आमरण किये हुये पापों को हर लेता है।

–नारदपुराज (उत्तर भाग, 38125)

साहित्यिक दृष्टिकोण से गंगा नदी साहित्यकारों, कवियों के हृदयों को स्पर्श करती नए मनोभावों को प्रकट करती है। "भारतेंदु हरिशचंद्र" जी के शब्दों में,

"नव उज्जवल जल धार हार हीरक सी सोहती,
बिच बिच छहरती बूंद मध्य मुक्ता मनि पोहती
लोल लहर लई पैवन इक इमी आवत
जिमी नरगन मन विविध मनोरथ करत मिटावत
सुभग स्वर्ग सोपान सरिस, सबके मन भावत
दरसन सज्जन पान त्रिविध भेद दूर मिटावत"

प्रेमचंद जी ने गंगा नदी का सुंदर वर्णन करते हुए लिखा–

और वह नदी ! वह लहराता हुआ नीला मैदान! वह प्यासों की प्यास बुझाने वाली! वह निराशों की आशा! वह पवित्रता का स्त्रोत! वह मुट्ठी भर खाक को आश्रय देने वाली गंगा हस्ती मुस्कुराती थी और उछलती थी।

प्रेमचंद (गुप्तधन भाग–1 पृ–143)

"गरूड़ ध्वज " में गंगा की विशेषता अलौकिक पवित्रता का बखान करते हुए लक्ष्मी नारायण मिश्र जी, कहते है, कि गंगा की पवित्रता में कोई विश्वास करने

Scanned with OKEN Scanner

नही जाता, गंगा के निकट पहुँच जाने पर अनायास, यह विश्वास जाने कहाँ से आ जाता है।

कालीदास जी ने गंगाष्टक में गंगा की महिमा का वर्णन करते हुए लिखा है--

"हे गंगे! तुम्हारे शरीर के संसर्ग से सांप, घोड़े, हिरण और बंदर आदि भी, कुमारी शिव के समान वर्ण वाले, शिव के संगी और कल्याणमय शरीर वाले होकर, अंग में भुजंग राजों को लपेटे हुए सानंद विचरते है, अतः तुमको नमस्कार है।

"गंगा आए कहाँ से, गंगा जाए कहाँ रे
लहराए पानी में जैसे धूप छाँव रे"

जिस प्रकार भगवान शिव आदि अनंत है उसी तरह गंगा भी असीम है।

भगवान श्री कृष्ण ने भागवद गीता में अर्जुन को बतलाया कि नदियों में मैं गंगा हूँ। अर्थात् सर्वश्रेष्ठ हूँ। गंगा की महिमा का वर्णन आदि शंकराचार्य द्वारा रचित "गंगा स्तोत्रम्" में भी मिलता है जिसमें, गंगा का प्राकृतिक सौंदर्य चित्रण मंत्रमुग्ध कर देता है।

"देवी सुरेश्वरी भगवती गंगे त्रिभुवन तारिणी तरल तरंगे
शंकर मौली विहारिणी विमले, मम मतिरास्तां तव पदकमले"

8वीं शताब्दी में आए चीनी यात्री "होम सॉग" ने गंगा स्नान की महिमा का वर्णन किया है। मुगल बादशाह अकबर अपने पीने के लिए गंगा जल का ही प्रयोग करता था क्योंकि गंगा जल सबसे कम प्रदूषित जल माना जाता है। मुगल काल के कवि शिरोमणि जगन्नाथ दास रत्नाकर ने "गंगा लहरी" की रचना की। उर्दू शायरी के बाबा आदम वाली दखमी के सुखन में प्रेमी को देख लेने की कामना की तुलना गंगा स्नान से की गई।

"आमिया चकवर्ती" द्वारा निर्देशित हिन्दी फिल्म "बसंत (1942) का प्रसिद्ध गीत

"गोरी मोसे गंगा के पार मिलना
मैं तो सोने की तोहे दिलाऊँ मुद्री"
ओ गोरी मोसे .....

उत्तर देती हुई नायिका यही कहती है--

"ओ साइयाँ मोसे गंगा के पार मिलना
मैं तो आऊँगी ओढ़े हरि चुनरिया"

Scanned with OKEN Scanner

इस गीत का संगीत निर्देशन मैहर घराने के दिग्गज बाबा अलाउद्दीन खाँ के शिष्य श्री पन्नालाल घोष द्वारा किया गया।

1952 में प्रसिद्ध हिन्दी फिल्म 'बैजू बावरा" का गीत"

तु गंगा की मौज मैं जमुना की धारा',
हो रहेगा मिलना ये हमारा तुम्हारा'

गंगा और यमुना नदी के संगम का प्रतीक है। इस गीत के रचनाकार नौशाद ने इस गीत को राग भैरवी में पिरोकर हृदय स्पर्शी बनाया है।

गंगा की महानता को दर्शाते हुए 'शंकर जय–किशन' द्वारा निर्देशित फिल्म गीत

"हम उस देश के वासी है,
जिस देश में गंगा बहती है"।

परिचायक है गंगा की, भारतीयों की पवित्रता एवं सार्थकता का उनके निश्चल, निर्मल और सौंदर्य से अभिभूत पावन रूप का।

प्रसिद्ध अभिनेता राजकपूर जी के निर्देशन में बनी हिन्दी फिल्म 'संगम' का प्रसिद्ध गीत,

"मेरे मन की गंगा और तेरे मन की जमुना का,
बोल राधा बोल संगम होगा के नहीं।"

श्री कृष्ण और उनकी गोपियों के संग अठखेलिया इस गीत को सशक्त रुबरु कराती है।

1969 में प्रमोद चक्रवती के निर्देशन में बनी फिल्म 'तुमसे अच्छा कौन है' का गीत

'गंगा मेरी माँ का नाम' शंकर जय किशन का संगीत निर्देशन, गंगा नदी के प्रति श्रद्धा को दर्शाता है।

1964 में हिन्दी फिल्म 'गंगा की लहरें', का गीत'

"मचलती हुई हवा में छम छम'
हमारे संग संग चलें गंगा की लहरें।"

बहुत प्रसिद्ध हुआ जिसमें गंगा की कल–कल करती लहरों का वर्णन है और गंगा के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन है।

1967 में बनी फिल्म 'चंदन का पालना' का गीत

Scanned with OKEN Scanner

"ओ गंगा मैया पार लगा दे,
मेरी सपनों की नइया"

आनंद बक्शी द्वारा निर्देशित इस गीत में गंगा के दैविय रुप का वर्णन किया गया है। राग जोगिया में निबद्ध यह गीत अत्यंत मार्मिक जान पड़ता है।

1967 में ही बनी फिल्म 'मँझली दीदी' का गीत "माँ ही गंगा माँ ही जमुना" गंगा माँ के मातृत्व के रुप को दर्शाता है। जिसके पवित्र जल से हम सभी मन से, वचन से कर्म, से शुद्ध हो जाते हैं। अपने पापों का निवारण गंगा के जल में स्नान करने से या गंगा जल ग्रहण करने से कर पाते हैं।

1968 में बनी 'सुहागरात' का गीत–

"गंगा मैया में जब तक ये पानी रहे,
मेरे सजना तेरी जिंदगानी रहे।"

गीत, कल्याण जी आनंद जी द्वारा संगीत निर्देशित इस गीत में गंगा के वैदिक युग से लेकर सृष्टि के अंत तक बने रहने की कामना और नायिका का अपने साजन के लिये उतनी ही लंबी आयु की कामना कर गंगा के अस्तित्व पर प्रकाश डाला है।

1971 में बनी फिल्म "गंगा तेरा पानी अमृत" का यह मधुर गीत मोहम्मद रफी द्वारा गाया तथा संगीतकार रवि द्वारा निर्देशित किया गया।

"खेतों खेतों तुझसे जागी धरतरी पर हरियाली
फसलें तेरा राग अलापे, झूमे, बाली बाली
तेरा पानी पीकर मिट्टी सोने में ढल जाये।"

सुप्रसिद्ध निर्देशक, अभिनेता, संगीतकार, स्वर्गीय राजकपूर जी द्वारा सन् 1985 ई0 में 'राम तेरी गंगा मैली' फिल्म में गंगा नदी के प्रदूषित होने का खूबसूरत चित्रण आज के परिप्रेक्ष्य में आम व्यक्ति के कलूषित चित्रण को दर्शाया गया है।

"राम तेरी गंगा मैली हो गई
पापियों के पाप धोते–धोते

असमी लोक गायक भूपेन हजारिका द्वारा रचित गीत

"विस्तार है अपार, प्रजा दोनों पार
करे हाहाकार निःशब्द सदा
ओ गंगा तुम बहती हो क्यूँ।

Scanned with OKEN Scanner

इन दोनों गीतों में नारी या माँ पर हो रहे अत्याचारों को और समाज में पनप रही बुराईयों से ग्रसित मानव को गंगा का उदाहरण देकर सजग करने का प्रयास किया है। अपने आप में ये दोनों गीत मानवता, धर्मपरायणता पर गहरा आघात करते हैं और एक यह संदेश की पावन, पवित्र गंगा भी थक गई है। सामाजिक कलुषता और अन्याय को दूर करते–करते उसे भी इंतजार है एक नयी सोच का नये बदलाव था।

दुष्यंत कुमार की गज़ल

"इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिये
हो गई है पीर पर्वत की पिघलनी चाहिये।।
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है के ये सूरत बदलनी चाहिये।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही
हो कही भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिये।

वैदिक काल से साम गायन की जिस परम्परा से ध्रुवपद शैली विकसित हुई उसे लगभग पीढ़ियों से 'डागर बन्धुओं' ने संभाल रखा है। इसमें गंभीर आलाप के बाद जब "हर–हर महादेव गंगाधर" का नाद ज्वार की तरह उबलता है तो मानव मात्र के कल्याण के लिये गंगा का रौद्र रूप आँखों के सामने सजग हो जाता है। गंगा माँ की तत्परता, यह उत्साह अपनी संतान को हर प्रकार का संरक्षण देने हेतु स्पष्ट उजागर हो जाती है। मैदानों में गंगा की गति मंथर हो जाती है। शिव की जटाओं में भटकता दर्प तिरोहित हो जाता है और गंगा का प्रचंडकारी कोप शांत हो जाता है। मानों गंगा पयार्य बन जाती है सुख का, समृद्धि का। यही ध्वनि चारों तरफ गुंजायमान होती है।

"जोत से जोत जगाते चलो
प्रेम की गंगा बहाते चलो।।"

Scanned with OKEN Scanner